(ॐ श्रीगुरुवे नमः)

DELTA | Page No. 1 | Date : 5:1:2005

भजन-1

ओम् निरंजन प्यारे दुख भंजन हारे बुरे भले जैसे भी हैं हम है तो दास तुम्हारे - टेक

① कली- वो राघवेन्दर सरकार करतार कर पार मेरी नैया मझधार पाहि पारत् करे मेरी बैरी हुए काम सुबह-शाम आठो याम तेरो लेनो देनो नाम घात पेशना परे दुजे दुखदाई क्रोध राखे सभी से विरोध मोहे होन न दे बोध मेरी मति को हरे तीजे दुखदाई लोभ मिले नाई करे क्षोभ चरे हरी-2 गोभ याको पेट ना भरे।

तोड़- मोहनिशा ज्ञान बिन कैसे होय उजारे- ओम्------

② कली- बैरी पाँचवा है मद यानि कर राखी हद कैसे होके गदगद तेरी करु आशा तृष्णा का जोटा पी दे लिए फिर सोटा मोमे योग्यता टोटा कैसे छीस्ता धक बैरी प्राणन की आग जिस वक्त जाय जाग माँग बीदया रोटी साँग कैसे पूर्ति करु विषय इन्द्रिय को भोग मन में बन बैठो रोग जमे ना ध्यानयोग बता कैसे करु।

तोड़- बिना योग ये भोग रोग ये सज्जन लोग बता रहे-ओम्--

③ कली- घट मे अंधेरे लगे ममता का घेरा मन कहे मेरा-मेरा याकी मिटी ना-चाहा स्वामी कृपा ने धान तुम्हे कर्मो की पधान मैंने दिया नही दान आगे मिलेगा कहा हम है कर्मो का मारा कैसे होगा निस्तारा लिया तेरा ही सहारा

DELTA Page No. Date :

मेरा तू ही है सहाय तोहे छोड़ कहा जाऊँ किसे अपना बना

जन्म मरण की राह ये जनम् मरण को कष्ट घना तुम बिन

कौन निवारे - ओम् ....

(4) कली - ओ शंकर संहारी शीश जटा गंग धारी त्रिलोकी त्रिपुरारि

तेरी आयो मैं शरण शुक सनकादि सन्त गुनी ज्ञानी धनवन्त

श्री लक्ष्मी के कन्त मेरी राखियो परत तू ही श्री कृष्ण कन्हैया राम

राम जी रमैया तू ही सरस्वती मैया तेरे चुम् मैं चरन तू ही

ज्ञान जात ज्ञेय तू अक्षर ब्रह्म ए मेरे मन में जो भय याको करियो

हरण ।(तोड़-भव भय भंजन नाम आपको सुन आ गयो शरण

तिहारे ... ओम् ....

5. कली - चाहे कपटी हू कूर विनय करूंगो जरूर मेरे मुठ्ठी

भर धूर देओ डार-3 किया भीख से प्यार फिर भी हजारे

धिक्कार मरो ना अंहकार जो मार-3 कैसे जग रहूँ भारी

विषपति सहूँ दुःख कौन से कहूँ गुरु खेमदास स्वामी देव

निरंजन अन्तामी बजरंग जी नमामि तुम्हें बार-3 मात पिता कुल

गुरु बृहस्पति मिलके बनो सहोर हमारे - ओम् निरंजन प्यारे

दुःख भंजन हारे भले बुरे जैसे भी है हम है तो दास

तुम्हारे ।

DELTA Page No. Date :

भजन-2

मनु जी के बचन मंजूर कर दस भक्षण कहे धर्म का - टेक

① प्रथम धीर धारता धारना चाहिए द्वितीय क्षमा विचारना चाहिए तृतीय मन को मारना चाहिए चौथे चोरी दूर कर भण्डा फोड़ भरका--

② पंचम तन की पवित्र शुद्धि छठवें इंद्रिय जीत विरुधी सातवें निर्मल विद्या बुद्धि बेदों का पाठ जरूर कर फल उत्तम ऊँचे करम का — मनु जी - - -

③ प्याला में खुदी को छोड़ प्याला बेखुदी को पीव नशे में झूम
कर पुकार तू ही तू गीत गाता जा - अगर है शौक ---

④ ये धागा तोड़ दे तश्वीरे किताबे डाल पानी में मस्तयक बनके
क्या करना मसीकल को जलाता जा - अगर ---

⑤ खुदा तुम दूर मत समझो यही रस्ता है मस्लो का दुई की धूल
रख सर से इसी के बीच आता जा कहे मंसूर का जी से नवाले
कुफ्र का मन या अनलहक नाम बरहक है यही कलमा
सुनाता जा - अगर है शौक मिलन ---

भजन - 4

① जगत विरस का फूल बनाया हुआ है यही सब घटो में समाया
हुआ है - टेक

② नही दुसरा कोई उससे है न्यारा वो प्रपंच में भी समाया हुआ है

③ हर एक से जो रंगी बिरंगी ये जलवा उसी का दिखाया हुआ है

④ उसी के अकल में आती है बाते शरण सतगुरु के जो आया
हुआ है - जगत ---

⑤ ताकत उसी में है मुह खोलने की अगर भेद संतो से पाया हुआ
है धरमदास हरदम उसी के फिकर में करोडो की दौलत
लुटाया हुआ है - जगत ---

DELTA Page No. Date :

भजन - 5

वही मैं हूँ, वही मैं हूँ, वही मैं हूँ, वही मैं हूँ। टेक

① नही कोई नाम है मेरा नही कोई रूप है मेरा
परे जो नाम रूप से - वही मैं हूँ ---

② न ही कुल गोत्र वर्ण आश्रम नही कोई धाम है मेरा
जो है सर्वत्र परिपूरन - वही मैं हूँ ---

③ न बुद्धि ही पहुंच पाती न वाणी की जहा गम है
जो मन गोतीत अविनाशी - वही मैं हूँ ---

④ बने जो सिन्धु बुद बुदे समाये आप अपने में
सदा जो शिव समाया है - वही मैं हूँ ---

भजन - 6

सफा को मिला जब सफा हो गया मैं खुदी मिट गयी तो खुदा हो गया मैं, मुबा जिते जी इश्क वेग से फना से गुजर कि वका हो गया मैं, पढ़ाया सबक जबकि उस्ताद कुदरत खता से गुजर वेखता हो गया मैं, हुई जबकि मुझपर अताये बुजरगा उसी दिन मुसल्ले हवा हो गया मैं ~~रहा दृढ़ता दर बदर हुआ जब~~ फजीलत कनायत से वाकिब तमाम कर बेनवा हो गया मैं। रहा दृढ़ता दर बदर जिसको वही खुद समझ दिल रूबा हो गया मैं धरमदास सरतला खोज मेरे जैसा चाहता था वैसा हो गया मैं।

DELTA Page No. Date :

भजन-7

दरबार में सच्चे सदगुरु के दुख दर्द मिटाये जाते है

दुनिया के सताये लोग यहा सिने लगाये जाते है - टेक

① ये मयखाना है दिवानो की हर रसम यहा दिवाना है मयखाने जाम इबादत के यहा सबको पिलाया जाते है। दरबार - - -

② जिनको कुछ दर्द है। सतगुरु का उन पर है रहमत उनको ही सन्देश आता है और वही बुलाये जाते है - दरबार - - - - - - - - -

③ बदला - चाहे अपने मन को उनका मन बदला जाता है दे देगें दिल को दिल दार कहाये जाते है - दरबार - - - - - - - -

भजन-9

आतम् पद निर्वाणी समझो कोई ज्ञानी वेद शास्त्र और उपनिषद ~~कीजिए~~

ये संतन की बानी - टेक

① ज्ञान दो प्रकार है - परोक्ष और अपरोक्ष ज्ञान पढ़े सुने ज्ञान से ना
आगे मन की श्रवण मनन करके निदिध्यासन की प्राप्ति है।
~~सत~~ सनातन पुरातन से रीति साँधु जन की दो आने के लेके ज्ञान
करते डोले है बखान मन में भरो है अभिमान कामना है धन
की धन की कभी ना और जग की भरमावे पूजा पाठ को हटावे
इनपे मार पड़े धन की सदा बनी ना रही किसी की समय आवनी
~~का~~ आवनी - आतम पद निर्वाणी ---

② सुरती की डोरा बीच मन को बना ले मन का चित में लगा के गाँठ
बुद्धि से विचार ले नाम रूप तक है सुरती यही तक जाय मन पावे
आगे जाय ना चाहे एक मार ले कर्म उपासना से मल विक्षेप धोय
गुरु जी से लेके ज्ञान आवरण फार ले पाते आगे गमना है अगम निगम
पद है ऐसे। ज्ञान साधु - ऐसा मौन व्रत धार ले अगम अपार
अभेद अकथनीय की कैसे कछु कहानी - आतम पद ---

③ जो तू बोले चाले तो परमात्मा के गुण गाय ले गुणों भी सतोगुण होत
सुख दाई है जाने कर्म सत संग भक्ति को चढ़ गयो रंग नहाय लियो
ज्ञान गंग पाई प्रभुताई है लूट लियो यश गयो अकबर वश आयी
कीव लोग कर हँस-2 के ~~कि~~ कविताई है। करो ध्यान जप चाहे पूजा

पाठ तप छोड़ो अहमता भी गए सब यादों में भलाई है।

अहम कहानियां की दुनिया से मिट गई नाम निशानी----

(4) शिव जी भी मुक्ति हेतु महामंत्र जाप किये ध्रुव ने भी तप करके ध्रुव लोक पाया है जग प्रिय हरिहर ऐसो जात नारद जी ने वीणा ले हरि गुण गाया है। त्रेता में राम जी शिवलिंग पुजा की द्वापर में श्रीकृष्ण ने गिरीवर पुजवाया है कलयुग में तुलसी दास सूरदास मीराबाई अगुन सगुन आप मन हर्षाओ है अगुन सगुन बीच नाम सुहाई पद जो राम कहानी - आत्मपद ---------

(5) गुरु छेम दास जी ने आत्मा को पाय परमात्मा को अंश जीवात्मा बतायो है बड़े-2 दानी धर्मात्मा धर्महेत काया तक को दान कर गये जग में यश पायो है कुटिल आत्मा के तो करम के सवाल दो ड़ो उन्होंने तो सिर ऊपर भार ही बढ़ायो निरंजन दास बुरो भलो पापी पुनी कामी क्रोधी जैसो भी है गुरु ने अपनायो है। याचक शिष्य समान ना गुरु समान ना दानी - आत्मपद ---------

DELTA Page No. Date :

भजन-10

टेक- भगवान मेरे इस जीवन का कल्याण न जाने कब होगा
जिससे भय भ्रान्ति मिटा करती वह ज्ञान न जाने कबहोगा

(1) कली- जो निज दोषो का देखा है वो पाप अपराध से डरते है उस सद-
विवेक मानव मे सम्मान न जाने कब होगा-भगवान---

(2) चिन्ता और क्रोध वासना फिर मन में नही सताती है जिससे
प्रभु तेरा दर्शन हो वो ध्यान न जाने कब होगा-भगवान

3) शीतलता जिससे आती है सारी अशान्ति मिट जाती है वो नित्य
प्राप्त है प्राण सुधा पर पान न जाने कबहोगा-भगवान

(4) अच्छे दिन बीत जाते गुरु जब उपदेश सुनाते है। जन बहु विध
समझाते है भोग स्थल से योग स्थल में प्रस्थान न जाने
कब होगा-भगवान मेरे

भजन-11 Date 6/1/2005

लीला तेरी अजब निराली है-टेक

① तू अजर अमर अज निराकार परमेश्वर देह कभी न धरे बिन
पैर चले बिन कान सुने बिन हाँथ करोड़ो काम करे हर जगह
पर भगवन बास तेरा वो महा प्रलय तभी न मरे तू पिता है
सबका सब पुत्र तेरे भोजन दे सबका पेट भरे डर जिसे
तेरा वो निडर भया दुनिया से बिलकुल भी न डरे जिसकी
लौ तुझसे लगी रहे सुख दे उसका तू दुःख हरे हाकिम तू

DELTA Page No. Date :

सारी दुनिया का कोई हुकम तेरा टारे न टरे है! दीनबन्धु तेरी याद को पलभर में भवसिन्धु तरे सुखनिधान जग फूल बगिया का तूही माली है। सो लीला तेरी -

(2) तेरे किसी पर फल लटके किसी के ऊपर लगी फरी कहीं ऊँचे टीले चमके रहे कहीं नीची भूमि करतार करी कहीं घना विपिन कहीं ऊजड़ है। कहीं पर खुश्की कहीं पर तरी कहीं खाक उड़ा वे सुमा कहीं घास खड़ी है हरी-हरी कहीं गीत गवे कहीं हाय-हाय कहीं खुशी कहीं परी मरी कहीं जनम हुआ कहीं मरण हुआ कहीं गीत गवे कहीं चिता जरी कहीं द्वार पर नौबत बाज रही कहीं घर में अखियां नीर भरी किस तौर करे गुणगान तेरा प्रभु धन्य-2 तेरी कारीगरी कहीं अँधेरा किसी के घर में रोज दीवाली है-सो लीला - - - -

(3) कोऊ साहुकार किया तैंने कोई टुकड़े माँगे दर-दर के कोई शाहनशाह बना दिया कोई तके आश है घर-घर के कोई गुजरे करे है छप्पर में कहीं महल खड़े संगमरमर के कोई वक्त गुजारे डर-डर के कोई हंसे कहे कह मार-मार कोई रोवे आसु भर-भर के कोई हुकम चलावे लाखों पर कोई जीवे सेवा करके कोई मौज करे कोई पेट भरे अपने सिर बोझा धर-धर के कोई देख किसी के खुशी रहे कोई मरे खाँक में जल-जल के तेरी नजर में दुनिया को सब देखा भाली है-सो लीला तेरी अजब - - - - - - - - - - - - - - - -

(4.) कही खाल पड़े है धरती में कही ऊँची शिखर पहाड़ो की कही गर्मी मे तन गरम करा कही शांन दिखा दी जाड़ो की कही झील बना दी बड़ी-बड़ी कही शोभा पोखे तालो की कही बड़े समुंद्र नीर भरे कही धीव है नदी नालो की कही रेगिस्तान पड़े भारी कही शोभा प्यारी बागो की कही कोयल कूँ-कूँ शब्द करे कही काँय-काँय है काँगो की कही पर सूरज निकल रहा कही रात है रंगतलारो की कही शहर कही विरान हुआ कहीशान बुलनन्द बाजारो की कोई है गोरा किसी की काया बिलकुल काली है-सो लीला ----

(5) कोई-चले नही विन मोटर के कोई नंगे पैरो भाग रहा कही देर पड़े जग जेवर के कोई कर्ज किसी से माँग रहा कोई किसी के दुश्मन बन बैठा कोई प्रेम किसी से पाग रहा कोई चिड़क किसी पर नीर रहा कोई जला कही पर आग रहा कोई धर्म से मुखड़ा मोड़ रहा कोई धो पापो के दाग रहा कोई दुर्जन जनम बिगाड़ रहा कोई सज्जन दार वैराग्य रहा कोई महलन के अभिलाष करे कोई बनी हवेली त्याग रहा कोई सुथ की नीद मे सोय रहा कोई पड़ा फिकर में जाग भाई मुनियो के मन माया तेरी मोहनेवाली है-सो लीला ----

(७.) कोई जहाँ में तेरा जलवा तुझसा जलवेगर कोई नही तू सबके भीतर बाहर तुझसे बाहर कोई नही है करुणा निधान तुझसे महान धरतीपर कोई नही है! ईश्वर ~~तेरा~~ तेरी शानी का दुनिया में दिलावर कोई नही हितकारी तुझसा और प्रभु मेरी आवे नजर में कोई नही रुपराम को दर्शन दे क्यो देर लगा ली है - सो लीला तेरी - - - - - - - - - - -

भजन-१२-

सो धन्य-२ तेरी कारीगरी करतार - टेक

① तू ~~निरा~~ निराकार निर्विकार बता साकार रचाय दियो जग कैसे जागृत स्वप्न सुषुप्ति तू था फिर मुक्ति का मग कैसे क्या वस्तु भई जिससे देह भई फिर बना दई रंग-रंग कैसे रम सब में रहा धार सबको रहा फिर सबसे रहा अलग कैसे सब गुलो में बू सब रुहो में रुह फिर तू प्रभु सुगम कैसे जब आपनी पादो जवानी गुहता फिर कोई पकड़े पग कैसे कर्ता भर्ता हर्ता धर्ता फिर सबसे रहत अलग कैसे काशी काबे कबी पता न पावे फिर बता अलग कैसे बन पर्वत पृथ्वी नभ तारे सबको रहा कैसे धार-

सो धन्य-२ तेरी - - - - - - - - - - - - - - - - - -

DELTA | Page No. | Date :

2. किये रंग बिरंगे फूल और बादल ऐसा रंग रंगिनी कहो नहीं किये सूरज से चमकने पदार्थ ऐसी चमकने वाली कहीं नहीं नर तन सम चोला सिम दिया सुई धागा हाँथ में कहीं नहीं पत्ते-2 को रंग न्यारी तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं बरसे जब कर दे जल जंगल आकाश में सागर कहीं नहीं दे भोजन कीड़ी पन-चर को तेरे दिखे भण्डारे कहीं नहीं दिं न-रात न्याय में फरक पड़े ना तेरी लगी कचहरी कहीं नहीं कर्मों का फल यथा -योग मिले रूल रिहायत कहीं नहीं अखण्ड ज्योति अपार लिला कोई ते ना पायो तेरा पार- सो धन्य-2 तेरी ---

3. जाने वे किस विध गर्भ में रह कर दे क्रीड़ा बालकपन की इस जीवन मे जवानी जाने कहा से आई कभी रही ना जोवन की फिर बृद्धपन दे कर दिखा दे सबको धनी सो एक दिन बिगड़न को कोई पैसे पैसे को मुहताज रहे कोई को ही खोल रहो धन की कोई पिशा संग कामिन खेल करे कोई रो-रो राख करे तन की कोई भटकते-2 उमर गवावे कोई तृप्ति कर रहो मन की भूमि पर पर्वत और टीले कहीं-2 लहर हरे बन की कहीं ताल सुरंगे जल से भरे कहीं चोटी चमक रही पर्वत की कहीं सर्द समय के झोले चले कहीं धूप गर्द गर्मी पवन की कहीं चर्तुमास चग-चद आवे बरस के बहाय दे जल की धार- सो धन्य-2 तेरी ---

(4.) जब देन लगे तब ना निबेरे देदेता है इतना माल ना दे जब दिन-रा
कमाओ फिर भी रहे तू कंगाल अदना से आभा करे पलक मे फिर
पर तू ही कृपाल सभाके राजाओ राज ताजाओ का ताज
महाराज तू ही है काल का भी काल तू ब्रह्मा विष्णु सुरेश
महेश नरेश अदेश निराकी चाल तू इतना जबर नही तेरी
खबर मेरी सुदल वर मेरी करो निहाल गहूँ तेरे चरन रहूँ
तेरी शरण मत दे तू मरन हम है तेरे लाल दीन बन्धु दुःख भंजन
पीर कर भव से पार - सो धन्य-२ तेरी - - - — — ——— .

(5.) तू अनन्त तेरी गति अनन्त तुझ देख संत करे योग ध्यान है
साधन तेरे अमित बड़ेरे प्रेरे रवि शशि से महान ना दिखे
जाने कहा सीखे क्रीडी के बना दिये नाक और कान नही
धाया धरे रंग इतने भरे कि सीतरह नही गिन सकता जहान
नही तुझसा किसी के और मौर स्वामी तू है सबका प्रधान माया
के अनुगामी जीव के स्वामी अन्तर्यामी वलनिधान अति दुखी
भया तुझे कुछ रहा कर मुझ पर दया जन अपना जान तू ही है
सखा सनेही हमारा तूही है हमारा परिवार - सो धन्य-२ - - - -

(6.) चार वेद छः शास्त्र पुकारे सार गुण की समार नही ऋषि-
मुनि भी गाय-२ के हार गये पर तेरा पाया पार नही जो करनी

DELTA Page No. Date :

सो कर गुजरे किसी और की चाहत सहारा नही जो करनी चाहे कर गुजरे
किसी से तू भाचार नही जो करे सो ईश्वर तू आप करे किसी और कुछ
अकतियार नही करे भक्त रंक गले लिपटे बिन भक्ति भूप से प्यार नही
जो प्रेम करे उसे परिचय दे फिर ऊँच-नीच को रार नही फल दे कर्मो
के अनुसार तेरा मतलब का कोई यार नही हरिसिंह को दर्शन दे
क्यो देर लगा ली है = सो धन्य-2 तेरी - - - - - - - - - - - - - - - - - -

भजन- 13

शिवोहम्, शिवोहम्, शिवोहम्, शिवोहम्
अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हू - शिवोहम् - - - - -
अखिल विश्व का जो परमात्मा है
सभी प्राणियो का वही आत्मा है
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हू - शिवोहम् - - - - - - - - - - - -
जिसे शस्त्र काटे न अग्नि जलावे
गलावे न पानी न मृत्यु मिटावे
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ - शिवोहम् - - - - - - - - - - - -
अजर और अमर जिसे वेदो ने गाया
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सिखाया
अमर आत्मा है मरणशील काया
सभी प्राणियो के जो भीतर समाया
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ शिवोहम् - - - - - - - - - - - - - -

DELTA | Page No. | Date :

है तारो सितारों मे प्रकाश जिसका
है चन्द्र में सूरज में आभास जिसका
जो व्यापक है कण-2 मे है वास उसका
नही तीन कालो में हो नाश जिसका
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ - शिवोहम् ---

भजन - 14

जब दिल में मेरे खुदाई है
तो काबे सिजदा कौन करे
जब रूप हमारा राम है
तो फिर गैर की पूजा कौन करे
तू बर्फ गिरा मैं जल जाऊँ
तेरा तू तुझी मे मिल जाऊँ
मै करू कृपा तुम बरसो
यह रोज का झगड़ा कौन करे
मेरे दिलमें कूप भरे
जब चाहू मैं पिनू भर भर के
बिन पिये नशे मे चूर हरे
मे खाने की परवाह कौन करे

तू ही सामने आ मेरी सिजदा करूं

मजा आ जाये सिजदा करने में

तू और कहीं मैं और कहीं

यह नाम का सिजदा कौन करे

भजन- 15

अबना बनेगी तो फिर ना बनेगी

बार-2 नहीं काया मिलेगी - टेक

(1) किया ना सत्संग ना हरि गुण गाया

हीरा जनम योंही वृथा गवाया

तोड़- जननी तुझको फिर ना जनेगी - अबना - - - - - - - -

2. तेरी जबानी भरम में भुलानी

गुरु पिंड माता की बात ना मानी

तोड़- वैतरणी कैसे पार लगेगी - अबना - - - - - - - - -

(3) सुर फुर तेरी काया माटी

धरन पड़ेगी पतंग ज्यों काटी

तोड़ - माटी में माटी मिल के रहेगी - अबना - - - - - - - -

(4.) तिर्मुलानन्द विचार कहत है

सतगुरु की बानी जो गहत है

उसकी नैया पार लगेगी -

DELTA | Page No. | Date :

भजन-16

जाना तो निज को फिर जाना कहा है और खुद ही खुदा है तो पाना कहा है - ना बन्धन ना मुक्ति नही दासता है तो उसकी कृपा का ठिकाना कहा है - न कर्ता न भोक्ता नही कर्म किंचित तो प्रारब्ध का बहाना कहा है - दे दो तो दूंदो खुशी है तुम्हारी जवरियन का प्यारे जमाना कहा है परमानन्द को नही चाह हमको तो तत्वमसि का निशाना कहा है मानो न मानो खुशी है तुम्हारी निर्मुलानन्द फिर मनाना कहा है

भजन-17

गुरुदेव तुम्हारी महिमा का ये दीन प्राणी क्या जाने
अभिमान भरा जिसके अन्दर अभिवादन करना क्या जाने
जो पाखण्डो में मस्त रहे वह दीन धर्म को क्या जाने
जो नाच कूद कर पेट भरे वह भाव भक्ति को क्या जाने
जो होते है आखो के अँधे वे दिव्य दृष्टि को क्या जाने
जो दीपक ले हरि दर्शन करे वह परम प्रकाश को क्या जाने
जिन संग किया नही संतो का भव बन्धन तोड़ना क्या जाने
जिन गुरु को भेंट कोनी नही वह ईश्वर प्रेम क्या जाने
जो प्रेम नगर में गया नही वह सच्चिदानन्द को क्या जाने
स्वयं राधा बन कर नृत्य करे वह श्री कृष्ण को क्या जाने

जो सत्य लोक में गया नहीं वह पुरी आनन्द को क्या जाने
पर स्वारथ बात कभी ना करी वह अपने स्वरूप को क्या जाने
जिन दीन दुखी पर दया ना की वह मानुष जन्म को क्या जाने
अपने स्वारथ की बात करी वह निर्मुला नन्द को क्या जाने

भजन - 18

श्री सद्गुरु ने कैसा गजब कर दिया तमाशा अजब कर दिया।
भाषता था अभी तक भ्रम मात था
आप ही में जगत को विलय कर दिया
काम क्रोधादि चोरों से डरते रहे
ज्ञान की खड्ग देकर अमर कर दिया
दास वैराग्य की दृढ़ बंधाई जभी
घोर संसार रिपु को विजय कर दिया
चल-चक्र आवागमन का सुरेन्द्र को झगड़ा
सदा को खत्म कर दिया

भजन - 19

अवधु अँधा धुँध अँधियारा
कोई जानेगा जानहारा - टेक
या घट भीतर धन अरु बस्ती, यही में हाट पसारा ।
या घट भीतर बाग बगीचा यही मे सिंचनहारा
या घट भीतर सोना चाँदी या में लगी बाजारा
या घट भीतर हीरा मोती या में परखनहारा
या घट भीतर ~~नदिया~~ सात समुंद्र यही नदिया नारा
या घट भीतर सूरज चन्दा यही में नौ लख तारा
या घट भीतर बिजुली चमके यही में होय उजारा
या घट भीतर अनहद गरजे बरसे अमृत धारा
या घट भीतर काशी मथुरा यही में गढ़ गिरनारा
या घट भीतर देवी देवा यही में ठाकुर द्वारा
या घट भीतर ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादि अपारा
या घट भीतर आप लेत हैं राम कृष्ण अवतारा
या घट भीतर कामधेनु है कल्पवृक्ष इक न्यारा
या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के अटल भरे भण्डारा
या घट भीतर तीन लोक है यही में करतारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधु यही मे गुरु हमारा

DELTA | Page No. | Date :

भजन-२०

(दोहा) नानक नन्हा बन जा जितनी नेहीन दुब
बड़ी घास जर जायेगी दुब रहेगी खूब
अरे मन किस पर भूला है बता दे कौन तेरा है-हेक

(१) तेरे माँ बाप और भाई सभी स्वारथ के है साथी
तेरे क्या संग जायेगा जिसे तु कहता है मेरा है -अरे - - - -

(२) पड़ा रहे महल महलात धरी रहे लाख की दौलत ये बिस्तर
खाक में होगा सदा जंगल में डेरा है-अरे - - - - -

(३) जिन्हो पर चूमते हाथी उन्हो के लाख थे साथी पता
उनका नहीं पाया बता किस जा में गेरा है -अरे - - - -

(४) गुरु नानक महाज्ञानी जिन्होने गौर कर देखा जगत
धोखे की दुनिया है यहाँ ना तेरा है ना मेरा है
अरे मन किस पर भूला - - - - - - - -

राम का नाम लेकर चले जाएँगे, वो अमर नाम छोड़
कर जाएँगे, — राम...
~~ये ना पूछो की चल क~~
टूट जाए न माला हरि नाम की, कीमती है ये
बिखर जाएँगे — राम.....
तुम किसे दिखलाते हो ये चतुराईयां, ये
नहीं जो उतर जाएँगे — राम.....
बात मानो न मानो तुम्हारी आपकी इक दिन
इस दिन चले जाएँगे :— राम
ये न पूछो कि चल कर किधर जाएँगे वो कि
भेज देगा उधर जाएँगे। —— राम...

प्रेम से नाम हरि का जो जन गाएंगे ।
पार भव सिन्धु से वो ही तर जाएंगे ।। राम ---
टूट जाएगी बेड़ी जन्म मृत की
मौत के गर्भ में वे नर ना फिर आएंगे राम ---
अपने निज रूप को लाख अमर गए
उनके सत्संग से जन सुधर जाएंगे राम ----

DELTA Page No. Date :

(1) तेरा क्या लगना है मोल सोहम् बोल श्रीवोहम् बोल
क्या जीवन को करता आसा जैसे जल में पड़ा बतासा
दुनिया देती बुरी दिलासा, प्यारे तोल सके तो तोल
सोहम् बोल श्रीवोहम् बोल

(2) जिसने जिसने यहां पर जनम लिया है उसको एक
दिन कूच किया है; या जग का ढंग देख लिया है
प्यारे जीवन है अनमोल - सोहम् बोल श्रीवोहम् बोल

(3) जब यम फांस गले में डालें, सुत प्रीत माल ना
तोड़ उबारें, जर के नग तेरा तन झारें
घर से बाहर तुरंत निकालें जब खुले प्रेम की पोल
राजा सोहम् बोल श्रीवोहम् बोल,

(4) निर्मूल नन्द यही है चादर इसमें जरा
न झोल :- प्यारे सोहम् बोल श्रीवोहम् बोल ॥ तेरा :-